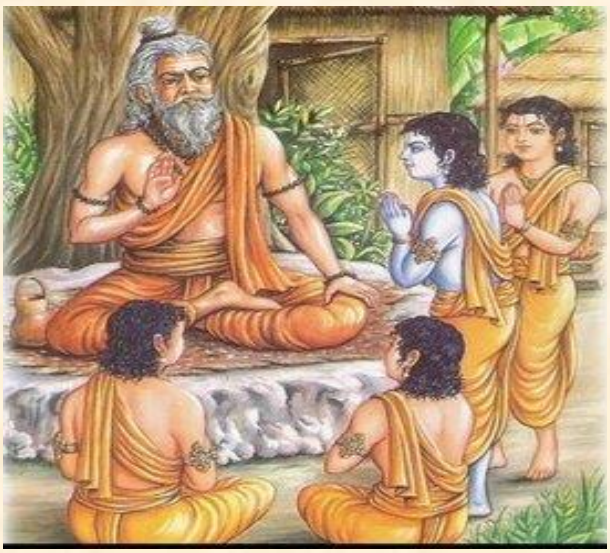

# गुरु क्या है.....

*गुरु वो होता है जो शिष्य के भीतर के प्रकाश को प्रकाशवान करता हैं।

*गुरू एक तेज है, जिनके आते ही, सारे सन्शय के अंधकार खतम हो जाते हैं।

*गुरू वो मृदंग है, जिसके बजते ही अनाहद नाद सुनने शुरू हो जाते है।

*गुरू वो ज्ञान हैं, जिसके मिलते ही भय समाप्त हो जाता है।

*गुरू वो दीक्षा है, जो सही मायने में मिलती है तो भवसागर पार हो जाते है।

* गुरू वो नदी है,जो निरंतर हमारे प्राण से बहती हैं।

*गुरू वो सत् चित् आनंद है,जो हमें हमारी पहचान देता है।

* गुरू वो बांसुरी है, जिसके बजते ही मन और शरीर आनंद अनुभव करता है।

* गुरू वो अमृत है, जिसे पीकर कोई कभी प्यासा नही रहता है।

*गुरू वो कृपा है, जो सिर्फ कुछ सद शिष्यों को विशेष रूप मे मिलती है और कुछ पाकर भी समझ नही पाते हैं।

*गुरू वो खजाना है, जो अनमोल है।

* गुरू वो प्रसाद है, जिसके भाग्य में हो उसे कभी कुछ भी मांगने की ज़रूरत नही पड़ती हैं।

CS Praveen Soni
Central Council Member &
Chairman, ICSI-CCGRT